आपका संगठन कितना बहुजनवादी है, परिक्षण से जांच करें !

{ कोई कॉपीराईट नही }

परिक्षण निर्माता व प्रकाशक

मान. शीतल मरकाम

सरसेनापति

गोंडवाना मुक्ति सैनिक दल !

प्रस्तुति शोषित समाज जागरुकता मुहिम !

मुफ्त डाउनलोड तथा वितरण के लिये

पार्टि-संगठन चरित्र परिक्षण !

सूचना

अपने संगठन को ध्यान में रखते हुए नीचे दिये गए प्रत्येक सवाल के विकल्पों में से आपको अ) ब) क) ड) में से कोई एक विकल्प चुनकर आखरी पेज पर दी गई उत्तर पत्रिका में उसी क्रमांक के आगे बने ( ) विकल्प के बॉक्स में उस विकल्प को लिखना है।

1) संगठन का वैचारिक आदर्श।

अ) गांधी, नेहरू अथवा ब्राह्मण धर्म है, ब) कोई विशिष्ट आदर्श नही है, क) पारि. कोपार लिंगो, ज्योतिराव फुले, राजर्षि शाहु महाराज, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, पेरियार ई.वी. रामासामी, अय्यंकाली, हजरत महंमद पैगंबर, कबीर, गुरु नानक, तुकाराम, इ. सामाजिक क्रांतिकारियों में से कोई एक है। ड) क में बताये गए सभी सामाजिक क्रांतिकारी संगठन के आदर्श है।

2) संगठन के वैचारिक आदर्शो का प्रकटिकरण।

अ) संगठन के नेता तथा कार्यकर्ता ब्राह्मणवादी संतो, धार्मिक विचारकों या संबंधित प्रतिक चिन्हों को स्वँय पहनते है या उन्हे अपने वाहन इ. में लगाते है। ब) संगठन के नेता और कार्यकर्ता ओशो इ. जैसे ब्राह्मणवादियों के प्रतिक-चिन्ह पहनते है। क) संगठन के नेता और कार्यकर्ता बहुजन संतों या बहुजन समाज क्रांतिकारियों के चित्र या प्रतिक चिन्ह पहनते है अथवा उन्हे अपने वाहन इ. में लगाते है। ड) संगठन के नेता और कार्यकर्ता बहुजन संतों या बहुजन समाज क्रांतिकारियों के चित्र या प्रतिक चिन्ह खुद पहनते है साथ ही उन्हे अपने वाहन इ. में भी लगाते है।

3) इल्युमिनॅटी के बारे में संगठन की जागरुकता।

अ) इल्युमिनॅटी शैतान-उपासक झाओनिस्ट बँकरों का संगठन है जो वर्ल्ड बँक, तथा विश्व के तमाम आर्थिक संगठनों को नियंत्रित करता है। अमेरिका इ. देशों को उसने अपने अर्थतंत्र से नियंत्रित किया हुआ है। कर्ज देकर इल्युमिनॅटी ने देशों को आश्रित बनाया। विश्वयुद पैदा किये। दोनों खेमों को कर्जा देकर भारी मुनाफा कमाया। इल्युमिनॅटी ने अमेरिका, ब्रिटेन फ्रांस इ. को नियंत्रित करने के लिये कम्युनिस्ट खेमे को बढावा दिया और उन्हे परमाणु शक्ति बनने में मदद की। दोनों विरोधी खेमों का इस्तेमाल अपने फायदे के लिये किया। वर्ल्ड बँक और संयुक्त राष्ट्रसंघ के माध्यम से इल्युमिनॅटी गरीब देशों पर अपनी लूट-परस्त नीतियां जबरन लागू करती है। इन नी. तियों के आडे आनेवाली सरकारों का तख्ता पलट दिया जाता रहा है। अफगानिस्तान, इराक, लिबिया इ. देशों को इल्युमिनॅटी नियंत्रित नाटो फौजों ने तथा इजरायल ने फिलिस्तीन को तबाह-बर्बाद किया। शैतान-उपासक झाओनिस्ट इल्युमिनॅटी नैतिकता को नही मानती और घिनौने से घिनौने दमन का अपने फायदे के लिये इस्तेमाल करती है। इसलिये इल्युमिनॅटी-ब्राह्मणवादी गठबंधन से संघर्ष किस किस्म का होगा इसकी कल्पना की जा सकती है। संगठन इस की पूरजोर कोशिश करता है कि उनके कार्यकर्ताओं को इल्युमिनॅटी की जानकारी न हो। ब) संगठन अपने कार्यकर्ताओं को

इल्युमिनॅटी के बारे में कभी जागरुक नही करता। क) संगठन अपने कार्यकर्ताओं को इल्युमिनॅटी के बारे में पूर्ण रुप से जागरुक करता है। ड) संगठन अपने कार्यकर्ताओं को न सिर्फ इल्युमिनॅटी के बारे में जागरुक करता है बल्कि इल्युमिनॅटी के खिलाफ कारगर कामयाब संघर्ष की योजनाओं पर काम करता है।

4) विश्व के **95%** लोगों के जनसंहार के योजना की जानकारी।

अ) इल्युमिनॅटी का झाओनिस्ट-ब्राह्मणवादी गठबंधन विश्व के **95%** मूलनिवासी अवाम को जी.एम. फुड तथा संक्रमित दवाओं से शारीरिक और मानसिक रुप से निकृष्ट बना रहा है। निकट भविष्य में सुपर कंप्युटर व्दारा नियंत्रित उन्नत रोबोटों से हर क्षेत्र में काम लिया जाएगा जिससे बहुत बडी आबादी बेरोजगार हो जाएगी। इल्युमिनॅटी इस गैरजरुरी **95%** मूलनिवासियों का जनसंहार करना चाहता है ताकि वे इल्युमिनॅटी के खिलाफ इन्केलाब न कर सके। इस जनसंहार की योजना के संबंध में इंटरनेट पर विशाल सामग्री मौजूद है। इल्युमिनॅटी के झाओनिस्ट गठबंधन का हिस्सा होने के नाते ब्राह्मणवादी नेता इल्युमिनॅटी की इस योजना में चुपचाप सहयोग करते है। ब) संगठन के नेता किसी लालच से या अज्ञान से इल्युमिनॅटी की योजनाओं में मदद करते है या उनका विरोध नही करते क) संगठन इल्युमिनॅटी के झाओनिस्ट-ब्राह्मणवादी गठबंधन की जनसंहार की योजनाओं के प्रति मूलनिवासियों को जागरुक करते है। ड) संगठन इल्युमिनॅटी की शैतानी योजनाओं के खिलाफ अवाम को जागरुक कर इन योजनाओं को नाकाम करने की कार्ययोजनाओं पर कार्य करता रहा है।

5) इल्युमिनॅटी के प्रति संगठन की प्रतिकुलता या अनुकुलता।

अ) झाओनिस्ट गठबंधन का हिस्सा होने के नाते संगठन अपने सदस्यों को झाओ. निस्ट इल्युमिनॅटी की योजनाओं और विचारों के लिये अनुकुल और पुरक बनाता है ब) सदस्यों को झाओनिस्ट इल्युमिनॅटी की जानकारी न देते हुए भी उन्हे उसी के अनुकुल तैयार करता है। क) संगठन सदस्यों को झाओनिस्ट इल्युमिनॅटी के चरित्र के प्रति जागरुक करता है। ड) सदस्यों को झाओनिस्ट इल्युमिनॅटी के चरित्र और उनकी शैतानी योजनाओं के प्रति संपूर्ण रुप से जागरुक करता है।

6) उदारिकरण, निजीकरण और वैश्विकरण के स्वरुप की पहचान।

अ) संगठन कभी जिक्र तक नही करता कि उदारिकरण, निजीकरण और वैश्विकरण यह इल्युमिनॅटी की विश्व शोषण-व्यवस्था की नीतियों है और इनके खत्मे के लिये दलाल ब्राह्मणवादी हुक्मरानों के साथ साथ इल्युमिनॅटी व्दारा नियंत्रित साम्राज्यवादी ताकतों से भी संघर्ष करना होगा। ब) संगठन उदारिकरण, निजीकरण और वैश्विकरण के खिलाफ तकरीरें तो करता है लेकिन इनके अंर्तराष्ट्रीय स्वरुप के प्रति अपने कार्यकर्ताओं को कभी जागरुक नही करता। क) संगठन समझाता है कि उदारीकरण, निजीकरण और वैश्विकरण को खत्म करने के लिये देश के दलाल ब्राह्मणवादी हुक्मरानों के साथ साथ इल्युमिनॅटी व्दारा नियंत्रित साम्राज्यवादी ताकतों से भी संघर्ष करना होगा। ड) संगठन न सिर्फ पूर्ण रुप से जागरुक करता है बल्कि इल्युमिनॅटी नियंत्रित साम्राज्यवादी ताकतों के खिलाफ कामयाब संघर्ष की कारगर कार्ययोजना पर अमल करता है।

7) संगठन को अपेक्षित समाज-व्यवस्था की संपूर्ण रुपरेखा स्पष्ट होना।

अ) संगठन शोषण-परस्त झाओनिस्ट मनुवादी समाज-व्यवस्था कायम करना चा. हता है। ब) संगठन को कथित पूंजीवादी लोकतंत्र के सिवा दूसरा पर्याय नजर नही आता। क) संगठन मौजूदा लोकतंत्र में कुछ सुधार लाने का हिमायती है। ड) संगठन शोषण-विहीन समाज-व्यवस्था यानि बहुजनवादी सामाजिक गणतंत्र की व्यवस्था लाने के लिये संघर्ष करता है।

8) संघर्ष की नेतृत्वकारी ताकतों के प्रति संगठन की समझ।

अ) संगठन का विश्वास है कि धर्म-प्रमुखों के मार्गदर्शन में चंद उच्चशिक्षित विव्दान लोगों के हाथों में संगठन की बागडौर होनी चाहिये। ब) संगठन इस बात में विश्वास करता है कि धार्मिक नियंत्रण से मुक्त चंद उच्चशिक्षित विव्दान लोगों के हाथों में संगठन की बागडौर होनी चाहिये। क) संगठन मानता है कि गरीब जागरुकों को संघर्ष का नेतृत्व हासिल करने का अधिकार है लेकिन वास्तव में संगठन पर शिक्षित मध्यमवर्गियों का ही नेतृत्व है। ड) संगठन का मानना है कि शैतानी झाओनिस्ट ब्राह्मणवादी शोषण व्यवस्था के खिलाफ सिर्फ गरीब तबका ही जीवन-मरण का संघर्ष कर सकता है क्योंकि ऐसा करना उसके अस्तित्व का सवाल है नेतागीरी का नही। इसलिये संगठन ने लहरों वाली संगठन संरचना बनाई हुई है जिसमें निचली इकाईयों के सदस्य सर्वशक्तिमान होते है तथा अपने प्रतिनिधियों पर सीधे तौर पर नियंत्रण रखते है।

9) दिगर संगठनों के प्रति नजरिया।

अ) संगठन का नेतृत्व समान मिशन को समर्पित दूसरे संगठनों के प्रति दुश्मनी भरा रवैया रखता है। ब) संगठन का नेतृत्व नही चाहता की मूलनिवासी पसमांदा जातियों के अपने जातीय संगठन भी पनपे। क) संगठन को समविचारी दूसरे संगठनों के साथ मिलकर काम करने में या मिलकर चुनाव लडने से कभी कोई ऐतराज नही रहा है। ड) मिशन के कामों को अंजाम देने के लिये जरुरत पडे तो संगठन के नाम और उसे मिलने वाले श्रेय की पर्वा न करते हुए समविचारी संगठनों के साथ मिलकर काम करने में विश्वास रखता है।

10) मिशन के कामों में संगठन की नीति।

अ) संगठन के सदस्यों को जब पैसे और अन्य साधन उपलब्ध कराये जाते है तभी वे सक्रिय होते है। ब) संगठन के लोगों को सक्रिय करने के लिये प्रेरित करना पडता है। क) संगठन कार्यकर्ताओं को ब्राह्मणवाद के खिलाफ अभियान चलाने को प्रेरित रहते है और संगठन उन्हे इस में हर किस्म की मदद करता है। ड) संगठन अपने सदस्यों को संगठन के काम जब न हो तो उनके अपने खुद की प्राथमिकता वाले मिशन के कामों को अन्य लोगों की मदद से पूरा करने को प्रेरित करता है।

11) संगठन के कामों की बारंबारता।

अ) संगठन सिर्फ चुनाव के वक्त सक्रिय होता है। ब) संगठन साल में ज्यादा से ज्यादा **10-15** बार विभिन्न कार्यक्रम जैसे भाषण, मोर्चा, चंदा मांगना इ॰ के लिये कार्यकर्ताओं से संपर्क करता है। क) संगठन अपने कार्यकर्ताओं को बचे हुए **350** दिनों में अपनी प्राथमिकता का मिशन का काम करने की इजाजत देता है। ड) संगठन अपने कार्यकर्ताओं को साल के बचे हुए **350** दिनों में अपनी प्राथमिकता का मिशन का काम

करने के लिये प्रेरित करता है और उसमें हरसंभव मदद करता है।

12) बहुजन मिशन की सभी आवश्यकताओं की जानकारी होना।

अ) भारत की ब्राह्मणवादी-झाओनिस्ट शोषण-व्यवस्था बहुजनवादी धर्मो-पंथों को ब्राह्मण ावादी-झाओनिस्ट शोषण के मुताबिक ढालती है। अनैतिकता, दुश्मनी भरी प्रतिस्पर्धा, भ्रष्ट्राचार इ॰ को जानबुझकर बढाती है। अवाम के लिये तरह तरह की समस्याओं को पैदा कर लोगों को उनमें उलझाकर रखती है ताकि वे कभी ब्राह्मणवादी झाओनिस्ट शोषण-व्यवस्था के खिलाफ कामयाब संघर्ष करने के लिये एकजूट ना हो सके। इन सभी समस्याओं का सामना कोई एक संगठन नही कर सकता इसलिये चलाये जान. `वाला संघर्ष बहुआयामी तथा अत्यंत कठोर होगा यह बात संगठन अपने कार्यकर्ताओं से छिपाने की पूरजोर कोशिश करता है। ब) संगठन शोषण के खिलाफ चलाये जानेवाले संघर्ष के संपूर्ण स्वरुप का जिक्र अपने कार्यकर्ताओं से कभी नही करता। क) संगठन शोषण के खिलाफ चलाये जाने वाले संघर्ष में सिर्फ मोर्चे-सम्मेलन इ. से प्रतिरोध करता है। ड) संगठन अपनी सीमायें अच्छी तरह से जानता है और अपने कार्यकर्ताओं को इसकी स्पष्ट रुप से जानकारी देता है कि वह एक सफेदपोश कर्मचारियों का संगठन है, या वह वोट हासिल करने के मकसद से इकट्ठा की गई भीड से युक्त संगठन है जो ब्राह्मणवादी झाओनिस्टों व्दारा प्रायोजित बजरंग दल इ. सशस्त्र दमनकारी संगठनों का मुकाबला नही कर सकता। इसलिये विभिन्न लोगों व्दारा चलाये जा रहे संघर्षो में मदद करने की हिमायत करता है ताकि मिशन की सभी आवश्यकताएं पूरी हो सके।

13) मिशन की आवश्यकताओं को पूरा करने की इच्छाशक्ति।

अ) ब्राह्मणवादी-झाओनिस्ट शोषण-व्यवस्था को उखाडकर फेंकने के लिये और शोषण विहिन समाज व्यवस्था कायम करने के लिये जितनी भी जरुरी बातें है उन बातों को पूरा करने के लिये संगठन के कार्यकर्ता दिगर संगठनों के मिशन-पुरक कामों में मदद करें इस बात का संगठन पूरजोर विरोध करता है और न ही खुद ऐसे बहुजनवादी मिशन के कामों का आयोजन करता है। ब) संगठन अपने सदस्यों को बहुजन-मिशन के कामों की पूर्तता करने के लिये दिगर लोगों के अभियानों में हिस्सा लेने के लिये प्रेरित नही करता। क) संगठन अपने सदस्यों को बहुजन-मिशन के कामों की पूर्तता करने के लिये दिगर मुहिमों में हिस्सा लेने के लिये प्रेरित करता है। ड) संगठन मिशन-संघर्ष के संपूर् ा जरुरी कामों की सूची और प्रत्येक कार्य की रुपरेखा तथा कार्ययोजना बनाकर अपने सदस्यों की दिगर दिगर खुबियों, प्रेरणाओं तथा प्राथमिकताओं का वैज्ञानिक तरिकों से जायजा लेते हुए उनके लिये उनकी पसंदीदा भूमिका तय कर उन गतिविधियों को संचालित करने के लिये उन्हे प्रेरित तथा प्रशिक्षित करता है।

14) संगठन की जनसभाओं में आनेवाले वक्ताओं का स्वरुप।

अ) संगठन की जनसभाओं में अक्सर आर्य-ब्राह्मणों या उच्च अशरफी तबकों को बुलाया जाता है। ब) आर्य-ब्राह्मण तथा उच्च अशरफी तबकों के साथ साथ गैर आर्यब्राह्मण वक्ताओं को भी बुलाया जाता है। क) सिर्फ अपने संगठन के पसमांदा जाति तबकों के वक्ताओं को बुलाया जाता है। ड) अपने संगठन के गैरब्राह्मण गैरअशरफी पसमांदा तबकों के वक्ताओं के अलावा दिगर गैरजानीबदार पसमांदा जाति-तबकों के वक्ताओं को बुलाया जाता है।

15) संगठन के संम्मेलनों का मकसद।

अ) संगठन के सभा-सम्मेलनों में रटे-रटाये भाषण होते है। ब) संगठन के सभ. ा-संम्मेलनों में हमेशा नये नये मुद्दों पर भाषण होते है, यानि संगठन किसी भी एक मुद्दे पर संजिदा होकर लगातार काम नही करना चाहता। क) संगठन के सभा-संम्मेलनों में कार्यकर्ताओं को भाषणों के माध्यम से वैचारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। ड) संगठन के सभा संम्मेलन में पहले सौंपे गये कामों की कामयाबी और पेश आई कठिनाईयों पर विचार विमर्श किया जाता है और इन कठिनाईयों को दूर करने की कार्ययोजना बनाकर कार्यकर्ताओं के लिये कामों का नया लक्ष निर्धारित किया जाता है।

16) संगठन की प्राथमिकताएं।

अ) संगठन जनता की समस्याओं को उठाने का दिखावा करते हुए आर्य-ब्राह्मण ों को सत्ता तक पहुंचाता रहा है। ब) संगठन किसी भी एक मुद्दे लिये सतत रुप से काम नही करता बल्कि वक्त-बेवक्त नये नये मुद्दे उठाते रहता है इसतरह वह किसी भी एक मुद्दे को लेकर गंभीर नही है। क) संगठन ने मुद्दों की प्राथमिकताएं तय की है और कुछ विशेष मुद्दों पर सतत रुप से काम करता है। ड) संगठन ने मुद्दों-मसलों की प्राथमिकताएं तय की है और हर मसले पर काम करने के लिये प्रशिक्षित लोगों की हर स्तर पर टीमें बनाकर सक्रिय की हुई है।

17) संगठन के सभा-सम्मेलनों के भाषणों का मकसद।

अ) भाषण का केन्द्र-बिन्दू मिशन के किसी काम को अंजाम देना नही होता। ब) दिये जाने वाले भाषणों का स्वरुप लगभग एक जैसा रटा रटाया और भाषण की आ. पचारिकता पूरा करने वाला होता है। क) इन भाषणों की बदौलत इन्सान जागरुक होकर ब्राह्मणवादी दमन-शोषण के खिलाफ क्रियाशील बन जाता है। ड) भाषण का केन्द्र-बिन्दू मिशन के किसी काम को अंजाम देना होता है तथा मिशन के काम को अंजाम देने के लिये जरुरी बातें ही भाषणों का केन्द्रबिंदु होती है और इनकी बदौलत मिशन के काम संपन्न होते है।

18) संगठन के भाषणों का स्वरुप।

अ) विषय के विभिन्न पहलुओं को विभिन्न वक्ताओं को बांटा नही जाता बल्कि सभी लोग उसी विषय पर बोलते है। ब) ये भाषण सिर्फ नेतागीरी को बढावा देते है। क) विषय के विभिन्न पहलुओं को विभिन्न वक्ताओं में पहले से ही बांटा गया होता होता है। ड) विषय के विभिन्न पहलुओं को विभिन्न वक्ताओं की अलग अलग टीमों में पहले से ही बांट देने से वे उन पहलुओं का पूरा रीसर्च और अध्ययन हो कर प्रत्येक टीम का एक सदस्य उस पहलु पर बोलता है। जिससे ब्राह्मणवादी दमन-शोषण के उस मसले के खिलाफ अपराजेय जन-प्रतिरोध निर्माण करना मुमकिन होता है।

19) संगठन की वैचारिक ताकत।

अ) सदस्यों को ब्राह्मणवाद के मुताबिक ढालने के लिये एक निश्चित वैचारिक प्रशिक्षण कोर्स चलाता है। ब) सदस्यों को ब्राह्मणवाद के अनुकुल ढालने के लिये काफी तादाद में साहित्य तैयार किया है। क) संगठन ने अपने सदस्यों को ब्राह्मणवादी

दमन-शोषण के खिलाफ संघर्ष करने के लिये काफी तादाद में साहित्य तैयार किया है। ड) संगठन आम गैर आर्य-ब्राह्मण पसमांदा अवाम को झाओनिस्ट-ब्राह्मणवादी शै. तानी वैश्वीक शोषण-व्यवस्था के प्रति पूर्ण रुप से जागरुक करने और उसके खिलाफ कामयाब संघर्ष करने का प्रशिक्षण कोर्स चलाता है।

20) संगठन के कार्यक्रमों में श्रोताओं का स्वरुप।

अ) कार्यक्रम अक्सर हॉल में आयोजित किये जाते है जिसमें संघपरिवार समर्थक शिक्षित श्रोता हिस्सा लेते है। ब) कार्यक्रम बस्तियों में आयोजित किये जाते है जिसमें ब्राह्मण-धर्म में विश्वास रखने वाले अंधविश्वासी लोग हिस्सा लेते है। क) कार्यक्रम अक्सर हॉल या पंडाल में लिये जाते है जिसमें सफेदपोश शिक्षित गैरब्राह्मण कर्मचारी हिस्सा लेते है। ड) कार्यक्रम गरीब बस्तियों में छोटे छोटे समूहों में लिये जाते है ताकि उन्हे अच्छे से प्रशिक्षित कर उनके छोटे-छोटे स्वतंत्र कार्य-समूह बनाये जा सके।

21) बस्ती तथा विभिन्न क्षेत्रों में कार्यसमुहों का कार्यरत होना।

अ) बस्ती तथा शिक्षा क्षेत्र, व्यवसाय क्षेत्र इ. विभिन्न क्षेत्रों में संगठन के कार्यसमुह नही है जिसकी वजह से इन क्षेत्रों में पसमांदा बहुजनों को विभिन्न किस्म के ब्राह्मण ावादी दमन-शोषण का सामना करना पडता है। ब) संगठन विभिन्न क्षेत्रों में कार्यसमुह बनाता जरुर है लेकिन उनका मकसद सिर्फ चंदा इकट्ठा करना तथा संगठन के भाषण इ. में भीड जुटाना है विभिन्न मसलों को लेकर लडना नही। क) सगठन ने विभिन्न क्षेत्रों में कार्य-समूह बनाये है लेकिन वे असरदार नही है। ड) संगठन ने विभिन्न क्षेत्रों में कार्य-समुह बनाये है जो बेहद असरदार है क्योंकि वे अपने कामों में समाज के दिगर जागरुकों का सहयोग भी लेते है।

22) संगठन व्दारा नेक जीवन-दर्शन प्रशिक्षण पर जोर।

अ) संगठन मनुवादी जीवन-दर्शन को मानता है। इसलिये वे अपने स्वार्थ को सर्वोपरी समझते है। ब) संगठन ओशो इ. ब्राह्मण-धर्म के बाबाओं व्दारा बताई गई बातों को अपना जीवन-दर्शन मानते है। क) संगठन के नेता तथा कार्यकर्ता ब्राह्मणवाद के खिलाफ संगठन तो चलाते है लेकिन प्रज्ञा, शील और करुणा पर आधिारित जीवन-दर्शन से उन्हे कोई लेना देना नही है। ड) पूजारी विहीन शोषण-विहीन समाज को कायम करने के लिये अवाम में प्रज्ञा, शील, करुणा पर आधारित शोषण-विहीन समाज के लिये पुरक जीवन-दर्शन को अपनाने पर संगठन अपने कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करता है।

23) संगठन की पूजारी-विरोधी नीति।

अ) संगठन पंडे, भिख्खु, मौलवी इ. के रुप में सक्रिय सभी पूजारियों को महत्व देता है और मंदिरों की संपत्ति को समाज की संपत्ति बनाने का विरोध करता है। ब) संगठन मंदिरों की संपत्ति को समाज की संपत्ति बनाने का विरोध करता है। क) संगठन मंदिरों की करोडों अरबों की संपत्ति को राष्ट्रीय संपत्ति बनाने तथा मंदिरों में चल रही देवदासी इ. सामाजिक हैवानियत को रोकने का समर्थक है। ड) संगठन मंदिरों की करोडों अरबों की संपत्ति को राष्ट्रीय संपत्ति बनाने तथा मंदिरों में चल रही देवदासी इ. सामाजिक हैवानियत को रोकने के खिलाफ जनसंघर्षो का आयोजन करता रहा है।

24) पसमांदा बहुजन अवाम के विचारों का जायजा लेते रहना।

अ) सदस्यों या हिमायतियों के विचारों, सुझाओं तथा शिकायतों का जायजा लेने की बात का संगठन विरोध करता है। ब) सदस्यों या हिमायतियों के विचारों, सुझावों तथा शिकायतों का जायजा लेने की बात सोचता तक नही है। क) सदस्यों या हिमायतियों के विचारों, सुझावों तथा शिकायतों का जायजा लेने की बात को संगठन मानता है लेकिन ऐसी कोई यंत्रणा कायम नही करता। ड) संगठन के कार्यकर्ता सहयोग राशी के साथ साथ सदस्यों या हिमायतियों से उनकी राय, सुझाव, तथा शिकायते इ. भी नियमित रुप से इकट्ठा करते है और उन पर योग्य कार्रवाई होकर उस कार्रवाई के बारे में संबंधित सदस्यों या हिमायतियों को अवगत कराया जाता है।

25) चुनाव या आन्दोलन में संगठन के सहयोगी।

अ) संगठन ब्राह्मणवादी संगठनों या लोगों से सहयोग करता है। ब) संगठन चुनाव में या संघर्ष में केवल बहुजनों के संगठनों से सहयोग करता है लेकिन अंततः विध ाानसभा या संसद में या बहुजनों के आन्दोलनों में ब्राह्मणवादियों से समझौता करता है। क) संगठन ब्राह्मणवादी संगठनों से कभी कोई सहयोग नही करता लेकिन अन्य बहुजनवादी संगठनों से भी सहयोग नही करता। ड) संगठन दिगर बहुजनवादी संगठनों से पूरा सहयोग करता है और ब्राह्मणवादी संगठनों तथा उनकी शोषण-व्यवस्था को ध वस्त करने की पूरजोर कोशिश करता है।

26) संगठन के विकास की गति।

अ) फिलहाल संगठन की ताकत तेजी से कम हो रही है। ब) संगठन की ताकत में लगातार कमी आ रही है। क) संगठन का सतत रुप से विकास हो रहा है। ड) संगठन का तेजी से विकास हो रहा है।

27) संगठन की निर्णय-प्रक्रिया।

अ) संगठन के सभी निर्णय सर्वोच्च नेता व्दारा लिये जाते है। ब) सभी निर्णय नेताओं की सर्वोच्च कमिटी व्दारा तय किये जाते है। क) सभी निर्णय नेताओं की सर्वोच्च कमिटी व्दारा निचली कमिटियों की सिफारीशों के मुताबिक लिये जाते है। ड) सभी निर्णय स्थानीय कमिटीयों के सदस्यों व्दारा संगठन की नीतियों तथा कार्यक्रमों के अनुरुप लिये जाते है जिन्हे उपरी कमिटियां जिसमें विभिन्न स्थानीय कमिटी तथा विभिन्न मुहिमों के प्रतिनिधि होते है मंजूर करती है।

28) संगठन के पदों के चयन में प्राथमिकता।

अ) संगठन आर्थिक रुप से सक्षम आर्य-ब्राह्मण अशराफ लोगों को वरीयता देता है इसलिये संगठन के अधिकतर पद आर्य-ब्राह्मण अशराफ ताकतवर लोगों को दिये जाते है। ब) संगठन के अधिकतर पद आर्य-ब्राह्मण या उच्च अशराफ तबकों को दिये जाते है। क) संगठन के उच्च पद पिछडे-पसमांदा तबकों को उनकी तादाद के अनुपात में दिये जाते है। ड) संगठन उन बहुजन पसमांदा जातियों के समर्पित कार्यकर्ताओं को जरुरत से ज्यादा प्रतिनिधित्व देता है जिन पसमांदा जाति-समुदायों को आज तक प्रतिनिधित्व नही मिला।

29) संगठन में नेतृत्व परिवर्तन की प्रक्रिया।

अ) संगठन का नेता खुद अपना उत्तराधिकारी तय करता है। ब) संगठन के सर्वोच्च नेताओं की कमिटी नेतृत्व परिवर्तन को तय करती है। क) संगठन में चुनाव प्रक्रिया के तहत नेतृत्व परिवर्तन किया जाता है। ड) स्थानीय ईकाई व्दारा चुने गए प्रतिनिधियों की सभा में से ही सर्वोच्च नेतृत्व चुना जाता है।

30) अधिकतम बार पदों पर चुने जाने संबंधी संगठन की नीति।

अ) संगठन के सर्वोच्च पदों पर संगठन का नेता जबतक चाहे तब तक काबिज रह सकता है। ब) संगठन में हर निश्चित अवधी के बाद सर्वोच्च नेता के पूर्नचयन की रस्म अदायगी मात्र की जाती है। क) संगठन में चुनाव होते है और कोई भी चुनाव में विजयी होता रह कर चाहे जबतक पद पर काबिज रह सकता है। ड) संगठन का कोई एक पद तीन बार से ज्यादा धारण नही किया जा सकता तथा यह पद लगातार तीन बार भी धारण नही किया जा सकता ताकि ज्यादा से ज्यादा अनुभवी वरीष्ठ लोग पदों के बाहर भी हो ताकि पदों को अनावश्यक अहमियत ना मिल सके और सभी को मौका मिले।

31) संगठन की पिछडी पसमांदा जाति समुहों के आरक्षण की नीति।

अ) संगठन पिछडे पसमांदा जाति-तबकों के आरक्षण के एकदम खिलाफ है तथा आरक्षण कौम को बांटता है इ. दलीलें देकर अपने ही धर्म के कमजोर लोगों को आ. रक्षण देने का प्रतिरोध करता है। ब) संगठन आरक्षण का समर्थन करता है लेकिन वह कॅटेगीरी के अंदर अति पसमांदा के लिये अलग से कोटा देने का विरोध करता है। क) संगठन सही माईने में जिसकी जितनी संख्याा भारी उसकी उतनी भागीदारी के सिधान्त को मानते हुए अति-पिछडी जातियों के लिये अलग से कोटा देने का पूरजोर समर्थन करता है। ड) संगठन अति-पसमांदा जातियों के लिये अलग से कोटा देने के लिये ब्राह्मणवादी शोषण-तंत्र के खिलाफ मुहिम ही नही चलाता बल्कि वह अति-पसमांदा जातियों के लोगों को संगठन में ज्यादा से ज्यादा प्रतिनिधित्व भी देता है।

32) संगठन की ब्राह्मणवाद के खिलाफ जागरुकता मुहिम का स्वरुप।

अ) संगठन ब्राह्मण-धर्म की किताबों तथा प्रथाओं का पूरजोर ढंग से समर्थन करता है। ब) संगठन ब्राह्मण-धर्म तथा उसके शोषण को अवाम के बीच बेनकाब नही करता तथा ब्राह्मण-धर्म के देवि-देवताओं को अहले नबी, अहले किताब, सामाजिक सदभाव इ. बहानों से ब्राह्मणवादी वक्ताओं को शामिल कर ब्राह्मण-धर्म को मदद पहुंचाता है। क) वैचारिक रुप से ब्राह्मण-धर्म का विरोध करता है लेकिन उसे बेनकाब करने के लिये कुछ नही करता। ड) संगठन ब्राह्मण-धर्म तथा उसके शोषण को बहुजन अवाम के गैरब्राह्मण पसमांदा तबकों के बीच कामयाबी से बेनकाब करता है।

33) संगठन के धार्मिक सहयोगी।

अ) संगठन के नेता अक्सर ब्राह्मण-धर्म के धर्मगुरुओं, बाबाओं तथा मठाधीशों के साथ मिलकर सामाजिक सदभावना की बातें करते है। ब) संगठन के नेता सभी धर्मो के कर्मकांडी पूजारियों को अपने कार्यक्रमों में शरीक करते है। क) संगठन कर्मकांडी पंडे, मुल्ला, मौलवियों तथा मनुवादी बौध्द भिख्खुओं को अपने कार्यक्रमों में शामिल नही कराते। ड) संगठन कर्मकांडी पंडे, मुल्ला, मौलवियों तथा बौध्द भिख्खुओं के ब्राह्मण

ावादी स्वरुप को शोषित पसमांदा अवाम के बीच बेनकाब करने का काम करता है।

34) ब्राह्मण-धर्म के प्रभावों को दूर करने के प्रयास।

अ) संगठन ब्राह्मण धर्म के अंधविश्वास जैसे ध्यान, विपस्यना, परित्राण-पाठ, चिल्ला, भिख्खुओं तथा मौलवियों की पंडेशाही, कर्मकांड इ॰ के किसी भी रुपों का तथा इन सभी पूजारियों के वर्चस्व का पूरजोर समर्थन करता है। ब) संगठन उपरोक्त बातों का किसी भी तरह से सक्रिय विरोध नही करता है। क) संगठन ब्राह्मण धर्म के अंधविश्वास जैसे ध्यान, विपस्यना, परित्राण-पाठ, चिल्ला, भिख्खुओं तथा मौलवियों की पंडेशाही, कर्मकांड इ॰ के किसी भी रुपों का तथा इन सभी पूजारियों के वर्चस्व का पूरजोर विरोध करता है। ड) संगठन के कार्यकर्ता ध्यान, विपस्यना, परित्राण-पाठ, चिल्ला, भिख्खुओं तथा मौलवियों की पंडेशाही, कर्मकांड इ॰ के किसी भी रुपों का पूरजोर विरोध करते है तथा हर प्रकार के पूजारियों का बहिष्कार करते है।

35) समाज में कर्मकांड, अंधविश्वास और पूजारियों के प्रभाव को खत्म करना।

अ) संगठन समाज में कर्मकांड तथा पूजारियों के महत्व को बढाने का काम करता है ताकि समाज का हर व्यक्ति जन्म के पहले से लेकर मौत के बाद भी पूजारियों के पूर्ण नियंत्रण में आ जाये ब) संगठन अपने राजनीतिक फायदे के लिये इन पूजारियों के कर्मकांड और शोषण को नजरंदाज करता है। क) संगठन वैचारिक रुप से तो कर्मकांडों और पूजारियों का विरोधी है लेकिन इनके खतरनाक समाज-विघातक प्रभावों को खत्म करने के लिये कुछ नही करता। ड) संगठन कर्मकांड और पूजारी-नियंत्रित समाज की खौफनाक हालातों को बेनकाब करते हुए बिना पूजारियों के हर आम आदमी व्दारा शादी, मृत्यु इ. सभी सामाजिक रस्में पूरी करने की मुहिम चलाता है।

36) क्या संगठन विदेशी ताकतों की कठपुतली है ?

अ) संगठन विदेशी धर्मगुरुओं या दानदाताओं के आर्थिक संसाधनों पर निर्भर है इसलिये शोषण का समर्थन करता है। ब) संगठन विदेशी दानदाताओं पर निर्भर है इसलिये शोषण का विरोध करने का ढोंग करता है। क) संगठन विदेशी धर्मगुरुओं या दानदाताओं के प्रभाव से पूरी तरह से मुक्त है। ड) ऐसे धर्मगुरुओं, ऐसे दानदाताओं तथा उनके पीछे की ताकतों को बेनकाब करने का काम संगठन करता है।

37) जागरुकता मीडिया के संबंध में संगठन की नीति।

अ) संगठन राष्ट्रव्यापी या अंर्तराष्ट्रीय प्रिंट अथवा इलेक्ट्रनिक मीडिया के निर्माण की पूरजोर कोशिशें करता है। ब) संगठन ऐसे राष्ट्रव्यापी या अंर्तराष्ट्रीय प्रिंट अथवा इलेक्ट्रनिक मीडिया के निर्माण का समर्थक है। क) संगठन का मानना है कि ऐसा राष्ट्रव्यापी या अंर्तराष्ट्रीय प्रिंट अथवा इलेक्ट्रनिक मीडिया आर्थिक रुप से सक्षम व्यक्ति या ताकतवर संगठन ही कर सकते है। पैसेवालों से नियंत्रित मीडिया वैश्विक शोषण व्यवस्था के खिलाफ लडने का सिर्फ ढोंग कर सकता है लड नही सकता। ताकतवर संगठन के नेता को खरीदा या डराकर चूप किया जा सकता है। इसलिये संगठन स्थानीय स्तरों पर स्वतंत्र मीडिया के निर्माण पर जोर देता है। क) संगठन ज्यादा से ज्यादा जागरुक बहुजनों व्दारा खुद की कोशिशों से इंटरनेट पर ब्लॉग्स, यु टयुब इ. पर वीडिओ अपलोड करना, छोटी छोटी पुस्तिकाएं तथा पर्चो को प्रकाशित किया जाना,

जागरुकता वीडिओ डीविडी का निर्माण करना, जागरुकता गीतों का निर्माण करना, छोटे छोटे समुहों में चर्चाएं आयोजित करना इ॰ कामों को करने के लिये अपने संगठन के लोगों को प्रेरित करता है और इसमें हरसंभव मदद करता है क्योंकि जागरुकता के इन सभी तरीकों पर अमल करने वाले असंख्य समुहों से ही शोषित पसमांदा अवाम की आवाज न ही खरीदी जा सकेगी ओर न ही चूप की जा सकेगी।

38) फंड इकट्ठा करने संबंधी संगठन की नीति।

अ) संगठन अपने साहीत्य को अनाप-शनाप कीमत पर बेचकर तथा ज्यादा से ज्यादा चंदा वसूलकर अपने समर्थकों को लगभग लूटने का काम करता है तथा अपने कार्यक्रमों में गरीब बहुजन साहित्य के विक्रेताओं से अनाप शनाप (जैसे तीन दिन के तीन या छह हजार) रुपये वसूलकर उन्हे लूटता है। ब) संगठन का मकसद लोगों से ज्यादा से ज्यादा पैसा वसूलना है। क) संगठन अपने साहित्य की एकदम वाजीब कीमत रखता है तथा गरीब बहुजन साहित्य विक्रेताओं से कार्यक्रमों में स्टाल लगाने के कम से कम पैसे लेता है और उन्हे हर सुविधा देता है। ड) संगठन सदस्यों से वाजीब चंदा लेता है तथा गरीब बहुजन साहित्य विक्रेताओं से पैसे नही लेता क्योंकि वह जानता है कि ये लोग बहुजन मिशन के साहित्य का प्रचार-प्रसार करते है। इसलिये वह उन्हे आवश्यक जानकारियां देकर विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होने के लिये प्रेरित करता है तथा उनकी सुविधाओं का ध्यान रखता है।

39) संगठन की आम बहुजनवादी साहित्य के प्रति भूमिका।

अ) बहुजनवादी साहित्य के प्रचार प्रसार को रोकने के मकसद से संगठन बहुजन बुक-स्टालों पर हमला बोलता है तथा उनके साहित्य के खिलाफ दुर्भावना से झूठे मुकदमें दायर करता है। ब) संगठन बहुजनवादी साहित्य के बुक-स्टालों पर होने वाले हमलों तथा दायर किये जाने वाले मुकदमों से कोई सारोकार नही रखता। बुक-स्टालों को खुद ही भुगतना पडता है। क) संगठन सिर्फ अपने संगठन के साहित्य के बुक-स्टालों के खिलाफ हो रहे हमलों का प्रतिरोध करता है। क) ब्राह्मणवादी फासिस्ट संगठनों के हमलों से बचाने तथा बहुजन साहित्य के खिलाफ दुर्भावना से किये जाने वाले पुलिस केसों को लडने में संगठन हर संभव मदद तथा उपाय करता है।

40) जागरुकता साहित्य पर कॉपी राईट।

अ) संगठन अपने जागरुकता साहित्य पर कापीराईट लगाता है जिससे उस साहित्य को दिगर मिशन के लोग छापकर प्रसारित नही कर सकते। इस तरह चंद पैसों के लिये संगठन व्दारा दुश्मन संगठन की सेवा हो जाती है। ब) संगठन का साहित्य वैसे ही उबाउ और बेअसरदार है इसलिये उसके कॉपीराईट लगाने या न लगाने से कोई फर्क नही पडता। क) संगठन अपने कारगर जागरुकता साहित्य पर कॉपीराईट नही लगाता। ड) संगठन के साहित्य पर कोई कॉपीराईट नही होता तथा उसे छापने के इच्छूक लोगों को संगठन हरसंभव सहयोग करता है।

41) चंदा इकट्ठा करने के संगठन के दिगर तरिके।

अ) इकट्ठा किये जाने वाले चंदे का कोटा संगठन अपनी इकाईयों पर थोंपता है जिसे उन्हे कैसे भी पूरा करना ही है। ये पैसे अक्सर काले काम करने वालों से ही

इकट्ठा किये जाते है। ब) संगठन चंदे का कोटा नही थोंपता लेकिन काले काम करने वालों से चंदा वसूलता है। क) संगठन सिर्फ गरीब बहुजनों के चंदे पर निर्भर करता है लेकिन वह उन्हे चंदे का हिसाब नही देता। ड) संगठन सिर्फ गरीब बहुजनों के चंदे पर निर्भर करता है और वह उन्हे खर्चे की पाई पाई का हिसाब देता है।

42) पैसे को लेकर संगठन की बन रही छबी।

अ) संगठन के नेताओं की छबी भाषण झाडकर पैसे वसूलने वाले और संगठन का विस्तार कर ज्यादा से ज्यादा पैसे वसूलने वाले, या भाषण देकर वोट बटोरने वाले नेताओं की हो रही है क्योंकि संगठन के नेता सिर्फ भाषण देकर पैसे या वोट बटोरते हुए नजर आते है लेकिन शोषित अवाम के दमन-शोषण के खिलाफ कुछ भी नही करते। ब) संगठन लोगों से पैसे जरुर बटोरता है लेकिन उन्हे बडे बडे बेनतिजा सभा सम्मेलनों में खर्च कर देता है। क) संगठन के नेताओं की छबी यह है कि वे गैरवाजबी चंदा नही बसूलते और सोच समझकर मिशन के प्रत्यक्ष कामों में ही खर्च करते है। ड) संगठन की छबी यह है कि इकट्ठा किया गया चंदा स्थानीय इकाईयों के पास ही होता है। संगठन के उच्चस्तरीय नेताओं की भूमिका स्थानीय इकाईयों व्दारा निश्चित कार्यक्रमों को व्यापक स्तर पर अमल में लाने के लिये कोआर्डिनेटर जैसे होती है इसलिये स्थानीय इकाईयां तय कार्यक्रम को पूरा करने के लिये खर्चे को मंजूर करती है तथा खर्चे की देखरेख और लेखा-जोखा भी रखती है।

43) संगठन की शोषण-विरोध संबंधी नीति।

अ) लोग शोषण-विरोधी संघर्षो में हिस्सा न ले सके इसलिये संगठन लोगों को ध ार्मिक कर्मकांड तथा धार्मिक प्रथा-परंपराओं में दिनरात उलझाकर रखने की पूरजोर कोशिश करता है तथा लोगों को आखीरत यानि मरने के बाद मिलने वाले स्वर्ग-नर्क की ज्यादा चिंता होना चाहिये ये प्रचारित करता है। ब) संगठन कुछ हद तक इस दुनियां की समस्याओं से लडने की बात कह कर लेकिन प्रत्यक्ष में लडने का दिखावा कर कर्मकांड को समर्पित संगठनों के झांसे में जो धर्मातरित-गैरधर्मातरित पिछडे पसमांदा नही आते उन्हे बहलाने फुसलाने का काम करता है। क) संगठन शोषण-विरोधी संघर्ष को इबादत जितनी ही प्राथमिकता देता है। ड) संगठन अंधविस्वासों से आजाद कार्यकर्ता बनाने तथा उनके व्दारा शोषण-विरोधी संघर्ष चलाने को सर्वोच्च समझता है।

44) मूलनिवासियों को एकजूट करने की संगठन की प्राथमिकता।

अ) संगठन ब्राह्मण-धर्म या हिन्दुत्व की महानता को प्रचारित करने में संगठन के आर्थिक स्त्रोत का एक हिस्सा खर्च करता है। ब) संगठन सभी धर्मो के अच्छाईयों को प्रचारित करने के बहाने ब्राह्मण-धर्म के शोषक चरित्र को छुपाने में ब्राह्मणवादियों की अपरोक्ष रुप से मदद करता है तथा शोषण-परस्त और शोषण-विरोधी धर्मो के बीच के फर्क को ही खत्म करने की कोशिश करता करता है। क) ब्राह्मणवादियों व्दारा चलाये जा रहे नफरत-अभियानों को तथा ब्राह्मण-धर्म के शोषक चरित्र को बेनकाब करने संगठन अपने फंड का बडा हिस्सा खर्च करता है। ड) ब्राह्मणवादियों व्दारा चलाये जा रहे नफरत-अभियानों को तथा ब्राह्मण-धर्म के शोषक चरित्र को बेनकाब कर ब्राह्मण ावादी दमन-शोषण के खिलाफ धर्मातरित तथा गैरधर्मातरित पसमांदा मूलनिवासियों को एकजूट करने के लिये संगठन के फंड का बडा हिस्सा खर्च करता है।

45) संगठन की गतिविधियों का स्वरुप।

अ) बहुजन मुक्तियोध्दओं के जन्मदिन और पुण्यतिथी पर कार्यक्रमों का आयोजन कर एक सरीखे भाषण देने, रोशनाई करने, भोजनदान करने इ. आसान लेकिन शोषण-विरोधी संघर्ष के लिये व्यर्थ गतिविधियों से संगठन के नेता अपनी नेतागीरी कायम रखते है। ब) संगठन लाखो रुपये, अपना समय और परिश्रम खर्च कर होने वाले अन्याय को दूर करने की गुहारें सभा-संम्मेलन सा मोचों में शोषक सरकार के सामने लगाता रहता है यानि वह शोषक दुश्मनों से अपने भले की झूठी उम्मीद रखता है। क) संगठन अपनी पाई पाई सिर्फ बहुजन मिशन के कामों में यानि ऐसे कामों में जिनसे ब्राह्मणवाद और उसकी शोषण-व्यवस्था कमजोर होती है, मूलनिवासी बहुजनों के बीच एकता कायम होती है और मूलनिवासियों का शोषण के खिलाफ और शोषणविहीन समाज व्यवस्था कायम करने का संघर्ष मजबूत होता है में ही खर्च करता है। ड) संगठन उपर बताई गई बहुजन मिशन के काम करने के अलावा दूसरे बहुजनवादी संगठनों के बहुजन मिशन के कामों में उचित तालमेल भी कायम करता है।

46) शोषण और दमन के खिलाफ प्रतिरोध का स्वरुप।

अ) संगठन के आन्दोलनों में अक्सर कार्यकर्ताओं को पुलिस का लाठीचार्ज तथा कोर्ट के मुकदमों को सहना पडता है। ब) संगठन शांततामय मोर्चे इ. आयोजित कर शोषक ब्राह्मणवादियों से गुजारीश करता है कि वह उनके अधिकार न छीने या छीने गये अधिकार बहाल करें। क) संगठन शोषक ब्राह्मणवादियों के चरित्र को लोगों के सामने बेनकाब करने के अभियान चलाता है। ड) संगठन ऐसे शोषक ब्राह्मणवादियों तथा उनके पार्टि-संगठनों को मूलनिवासियों के दुश्मन करार देकर उनको ज्यादा से ज्यादा नुकसान पहुंचाने के अभियान सतत रुप से चलाता है।

47) संगठन की अवाम के दमन-शोषण के प्रति संवेदनक्षमता।

अ) छात्र, कर्मचारी, किसान, दलित, मुस्लिम, आदिवासी इ. पर हो रहे दमन-शोषण के प्रति संगठन संवेदनहीन रहता है। इनके लिये संगठन के पास कोई यंत्रणा या उपसंगठन नही है। ब) जब अन्याय से पीडित लोग संगठन के सदस्य बनने के लिये तैयार होते है तभी संगठन उनके मामलों में हाथ डालता है। क) संगठन या उसके कार्यकर्ता अन्याय से पीडित लोगों की मदद करते है और संगठन में शामिल होने जैसी शर्त भी नही लगाते। ड) संगठन के कार्यकर्ता न सिर्फ अन्याय पीडितों की हर तरह से मदद करते है बल्कि उन्हे इस ब्राह्मणवादी शोषण-दमन को हमेशा के लिये कैसे खत्म किया जा सकता है इसके प्रति पूर्ण रुप से जागरुक और प्रशिक्षित भी करते है।

48) शोषित पसमांदा के शोषण को लेकर नेताओं की राजनीति।

अ) बिहार के अमिरदास कमीशन ने इस बात को उजागर किया है कि दलितों के कत्लेआम करने वाले सवर्णो के सशस्त्र संगठन रणवीर सेना को राजनीतिक संरक्षण देने का काम लगभग सभी राजनीतिक पार्टियां करती है। यानि बहुजन नेता यह मानकर चलते है कि जबतक शोषकों का दमन-शोषण रहेगा तबतक शोषित अवाम उनके पीछे रहेगा और उनकी नेतागीरी चलती रहेगी। इसलिये सभी नेता इन दमन-शोषण को बर. करार रखना चाहते है, इसी वजह से कोई ठोस कार्रवाई नही करते। ब) नेता इसलिये

कोई कारगर कार्रवाई नही कर सकता क्योंकि ऐसा करने से उनके ब्राह्मणवादी आका नाराज हो जाएंगे। क) संगठन के सफेदपोश नेता अपने चरित्र के मुताबिक इन मामलों में जरुरी कठोर संघर्ष से डरते है इसलिये बेअसर कामों से काम चला लेते है। ड) नेता उन तमाम ताकतों को हरसंभव मदद करते है जो शोषकों को सबक सिखा सके और अन्याय से पीडित लोगों को लगभग एक साल की राशन-सामग्री मुहैय्या कराने के अलावा अन्याय करने वालों तथा उन्हे संरक्षण देने वालों का आर्थिक तथा राजनीतिक बहिष्कार करते हुए उन्हे कडा सबक सिखाने के अभियान चलाता है।

49) सशस्त्र दमनकारी संगठनों के खिलाफ संगठन की प्रतिरोध क्षमता।

अ) संगठन सिर्फ ऐसे प्रतिरोधहीन लोगों का समूह मात्र है जिन्हे वोट हासिल करने या उनकी मदद से चंदा वसूल करने के मकसद से इकट्ठा किया गया है। ब) संगठन ने अपने सफेदपोश वालंटियर खडे किये है लेकिन वे सशस्त्र दमनकारी संगठनों के खिलाफ बेकार है क्योंकि वे सिर्फ सभाओं में दंडा पकडने के काम के है। क) संगठन ने दमनकारी सशस्त्र संगठनों से कारगर ढंग से निपटने का तंत्र विकसित किया है। ड) संगठन दमनकारी सशस्त्र संगठनों का न सिर्फ कामयाबी से मुकाबला करता रहा है बल्कि दमनकारी सशस्त्र संगठनों के संरक्षकों के खिलाफ प्रतिशोधात्मक कार्रवाई कर उन्हे कडा सबक सिखाता रहा है।

50) शोषण के खिलाफ अवाम को संरक्षण।

अ) संगठन अपने कार्यकर्ताओं या समर्थकों पर उनके काम पर या शिक्षा क्षेत्र में होने वाले अन्यायों के प्रति संगठन कोई मदद नही करता। पीडितों को ही अपने अन्यायों से जुझना होता है। ब) संगठन उनके प्रति शाब्दिक हमदर्दी के सिवा कुछ नही करता। क) संगठन ने अपने कार्यकर्ताओं या समर्थकों पर होने वाले अन्याय से निपटने की संरक्षण यंत्रणा कुछ हद तक तैयार की हुई है। ड) संगठन ने कानूनी तथा दिगर स्तरों से युक्त कारगर संरक्षण यंत्रणा तथा अन्यायकर्ताओं तथा उनके राजनीतिक तथा राजतंत्र के संरक्षकों को सबक सिखाने की कारगर यंत्रणा बनाई हुई है।

51) दमन, शोषण और अन्याय के खिलाफ संगठन की प्रतिरोध क्षमता।

अ) संगठन दमन, शोषण और अन्याय के खात्मे के लिये पूरी तरह से ब्राह्मणवादी सरकार या शोषकों के व्यवस्थापन की मर्जी पर निर्भर करता है। ब) संगठन सिर्फ सभाए करता हैं, मोर्चे निकालता है लेकिन कभी समस्याओं का समाधान नही होता। क) संगठन अन्याय करने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करता है तथा अन्याय से पीडित लोगों को लगभग एक साल की राशन-सामग्री मुहैय्या कराता है ताकि वे अपना संघर्ष जारी रख सके। ड) एक साल की राशन-सामग्री मुहैय्या कराने के अलावा अन्याय करने वालों तथा उन्हे संरक्षण देने वालों का आर्थिक तथा राजनीतिक बहिष्कार करते हुए उन्हे कडा सबक सिखाने के प्रतिशोधात्मक मुहिम चलाता है।

52) जुल्म के खिलाफ लडने की संगठन की पूर्वतैयारी।

अ) कोई आन्दोलन या प्रतिरोध करने के पहले आन्दोलनकारी घायलों के इलाज की तैयारी, उनके जमानत की तैयारी, अपने लोगों के सुरक्षा के कोई इन्तेजाम नही करता। कार्यकर्ता खुद इन मसलों से निपटते है। ब) संगठन सिर्फ शाब्दिक हमदर्दी

जताता है। क) संगठन जमानत तथा केस का खर्चा इ॰ में बहुत कम मदद करता है। ड) संगठन इलाज, जमानत तथा केस का पूरा खर्चा उठाता है।

53) कानूनी तौर पर प्रतिरोध की संगठन की क्षमता।

अ) संगठन के पास वैचारिक रुप से प्रशिक्षित संगठन के हिमायती वकीलों की टीम नही है। ब) संगठन को पैसे लेकर काम देखने वाले गैरब्राह्मण वकीलों के सिवा कोई चारा नही है। क) संगठन के पास हिमायती वकीलों की टीम है। ड) संगठन के पास वैचारिक रुप से प्रशिक्षित संगठन के हिमायती वकीलों की टीम है।

54) पुलिस कस्टडी तथा जेल में अपने कार्यकर्ताओं की सुरक्षा की क्षमता।

अ) संगठन के पास ऐसा कोई संपर्क-तंत्र नही है जो पुलिस कस्टडी या जेल में उनके कार्यकर्ताओं को प्रतिशोधात्मक कार्यवाईयों की फौरन सूचना और सबूत हासिल करा कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जा सके। ब) संगठन का मामूली संपर्क तंत्र है जो बेहद नाकाफी है। क) संगठन का अपना संपर्क-तंत्र है जो पुलिस कस्टडी या जेल में उनके कार्यकर्ताओं को प्रतिशोधात्मक कार्यवाईयों की फौरन सूचना और जरुरी सबूत मुहैया कराता है ताकि दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जा सके। ड) संगठन पुलिस कस्टडी या जेल में उनके कार्यकर्ताओं के खिलाफ कोई प्रतिशोधात्मक कार्रवाही ही ना हो इसका पूरा पूरा ध्यान रखता है लेकिन कभी कोई प्रतिशोधात्मक कार्रवाई हो जाए तो जेल में कैदियों का संगठन तथा बाहर में उनके मानवाधिकार संरक्षण संगठन दोषियों के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई के लिये हर स्तर पर कार्रवाई करते है।

55) सांप्रदायिक और जातीय हिंसा से शोषितों की रक्षा करना।

अ) संगठन सांप्रदायिक तथा जातीय दंगों को बढावा देता है। ब) संगठन जातीय या सांप्रदायिक दंगों की रोकथाम के लिये कुछ नही करता बल्कि सिर्फ शाब्दिक हमदर्दी जताता है। क) संगठन विभिन्न जागरुक गैर आर्य-ब्राह्मण जाति-समुदायों के लोगों की संयुक्त कमिटियां बनाकर लोगों को जागरुक करने का काम सतत रुप से करता है। ड) संगठन न सिर्फ विभिन्न जागरुक गैरब्राह्मण जाति-समुदायों के लोगों की संयुक्त कमिटियां बनाकर लोगों को जागरुक करने का काम सतत रुप से करता है बल्कि दंगा उकसाने वालों पर नजर रखकर ऐसे हर प्रयास तथा अफवाओं को बेनकाब करता है तथा उसके वालंटियर लोगों की रक्षा करते है।

56) हिंसा ग्रस्तों की मदद करने की संगठन की प्राथमिकता।

अ) संगठन भोजनदान, सभा, सम्मेलन या चुनाव इ॰ में तो लाखों रुपये खर्च करता है लेकिन बहिष्कृत हिंसा-पीडित दलित, आदिवासी, मुस्लिमों को साल भर का राशन मुहैया कराने की कल्पना तक का विरोध करता है। ब) संगठन सिर्फ हिंसा पीडित दलित, मूस्लिम आदिवासियों से मिल कर अपनी शाब्दिक हमदर्दी जताता है लेकिन कुछ भी ठोस नही करता। क) संगठन थोडी बहुत आर्थिक सहायता देता है लेकिन मामले में अंत तक साथ नही देता। ड) संगठन बहिष्कृत हिंसा-पीडित दलित, मुस्लिम, आदिवासियों को साल भर का राशन इ॰ मुहैया कराता है ताकि बहिष्कार का उन पर कोई असर ना हो। संगठन अंत तक कोर्ट में पूरी शिद्दत से लडता है तथा दोषियों के खिलाफ राजनीतिक तथा आर्थिक बहिष्कार करने इ. प्रतिशोधात्मक कामों में जुट

जाता है।

57) शोषित अवाम के मानवाधिकारों की रक्षा करना।

अ) पुलिस या कारखाना मालिकों व्दारा अवाम या मजदूरों के मानवाधिकारों के हनन करने के मामलों में संगठन पुलिस या मालिकों की हिमायत करता है। ब) इन मामलों में संगठन मूकदर्शक बना रहता है। क) संगठन इन मामलों के खिलाफ सिर्फ शाब्दिक प्रतिरोध दर्ज कराता है। ड) संगठन मानवाधिकार हनन के मामलों के खिलाफ न्यायालयों में मामले दायर करने से लेकर जनता को अन्यायियों के खिलाफ जागरुक करने और दोषियों को तथा उनके राजनीति व सरकारी तंत्र के संरक्षकों को आर्थिक, राजनीतिक, व्यवसायिक इ॰ नुकसान पहुंचाने के कार्यक्रम पर अमल करता है।

58) पसमांदा बहुजन समाज के दुश्मनों से मुकाबला।

अ) संगठन का मकसद झाओनिस्ट ब्राह्मणवादी मनुवादी शासन कायम करना है इसलिये पसमांदा बहुजनों को लाचार बनाने में वह सक्रिय है। ब) संगठन बहुजन पसमांदा समाज के दुश्मनों से बिल्कुल नही लड सकता क्योंकि वह इन्ही ब्राह्मणवादियों के सहयोग से राजनीति करता है। क) संगठन ने पसमांदा बहुजन समाज को ब्राह्मण ावादी हमलों से बचाने के लिये कारगर प्रतिरोधी यंत्रणा का विकास किया है। ड) संगठन ने न सिर्फ पसमांदा बहुजन समाज को ब्राह्मणवादी हमलों से बचाने के लिये कारगर प्रतिरोधी यंत्रणा का विकास किया है बल्कि वह यह जानता है कि गैर आर्य-ब्राह्मण मूलनिवासी देश का सबसे बडा बाजार है और अगर वह ब्राह्मणवादियों के उत्पादनों का चयनात्मक बहिष्कार करें और छोटे-छोटे स्तरों पर निर्मित पसमांदा जाति तबकों के लोगों व्दारा निर्मित उत्पादों का ही उपयोग करें तो झाओनिस्ट ब्राह्मणवादियों को परास्त किया जा सकता है। इस दिशा में संगठन काम कर रहा है।

59) ब्राह्मणवादियों के माल का बहिष्कार तथा बहुजनों के उत्पादों को बढावा।

अ) संगठन ब्राह्मणवादियों के माल का हिमायती है। ब) संगठन ब्राह्मणवादियों के माल के चयनात्मक (सिलेक्टिव) बहिष्कार की हिम्मत नही रखता। क) संगठन ब्राह्मण ावादियों के माल के चयनात्मक (सिलेक्टिव) बहिष्कार करने और सिर्फ बहुजनों के माल को बढावा देने का हिमायती तो है लेकिन वह इस सिलसिले में कुछ नही करता। ड) संगठन ने बहुजनों व्दारा बस्ती बस्ती में समाज आत्मनिर्भरता केन्द्र विकसित किये है जो बेरोजगार युवकों महिलाओं की मदद से रोजमर्रा की सामग्री जैसे नाश्ते का सामान इ. का निर्माण कर जागरुक बहुजनों की मदद से बहुजनों बस्तियों में इन ब्राह्मणवादी उत्पादों का बहिष्कार करने की मुहिम चलाई हुई है।

60) शोषक ब्राह्मणवादी संगठनों को ध्वस्त करने की संगठन की नीति।

अ) फासिस्ट आर्य-ब्राह्मणवादी मूलनिवासी पसमांदा बहुजनों के खिलाफ विभिन्न स्तरों पर रची जाने वाली साजीशों में संगठन पूरा सहयोग करता है। ब) फासिस्ट आर्य-ब्राह्मणवादी मूलनिवासी पसमांदा बहुजनों के खिलाफ विभिन्न स्तरों पर रची जाने वाली साजीशों में संगठन अपरोक्ष रुप से पूरा सहयोग करता है। क) फासिस्ट आर्य-ब्राह्मणवादी मूलनिवासी पसमांदा बहुजनों के खिलाफ विभिन्न स्तरों पर रची जाने वाली साजीशों की जानकारी लेने की कोई यंत्रणा संगठन की इकाईयों के पास नही

है। ड) संगठन योजनाबध्द ढंग से ब्राह्मणवादी फसिस्ट संगठनों में से जानकारियां हासिल करने तथा ब्राह्मणवादियों को भ्रमित करने और उनमें विघटन पैदा करने की कारगर योजनाओं पर कामयाबी से चल रहा है।

61) संगठन व्दारा न्याय हासिल करने में होने वाले प्रतिरोधों का मुकाबला।

अ) ब्राह्मणवादी-झाओनिस्ट संगठन बेकसूर आदिवासी-दलितों को नक्सलवादी तथा बेकसुर मुस्लिमों को आतंकवादी प्रचारित कर उनका मुकदमा लडने वाले वकीलों पर हमले करने का काम करते है। संगठन इसमें ब्राह्मणवादी-झाओनिस्ट संगठनों का पक्ष लेता है। ब) संगठन इन मामलों में कुछ नही करता और चुप रहता है। क) संगठन ब्राह्मणवादी-झाओनिस्ट संगठनों का उन्ही के तरिकों से जवाब देता है। ड) संगठन ब्राह्मण ावादी-झाओनिस्ट संगठनों का उन्ही के तरिकों से जवाब देने के अलावा उन्हे अवाम के बीच बेनकाब करता है और इन ब्राह्मणवादी-झाओनिस्टों के संरक्षकों के खिलाफ हर स्तर पर प्रतिशोधात्मक मुहिम सतत रुप से चलाता है।

62) अंर्तविरोधों से फायदा उठाकर दुश्मन संगठनों को नुकसान पहुंचाना।

अ) अपने खुद के अंर्तविरोधों को सुलझा न पाने की वजह से दुश्मन हमारे अंर्तविरोध ाों से फायदा उठाकर हमें विभाजित करने और लडाने में कामयाब हो रहा है। ब) हमारे अंर्तविरोधों से दुश्मन कुछ हद तक फायदा उठाने में कामयाब हो रहा है। क) दुश्मन हमारे अंर्तविरोधों से फायदा नही उठा पा रहे है लेकिन संगठन दुश्मनों के अंर्तविरोध ाों से कोई फायदा नही उठा पा रहा या दुश्मन संगठनों को आपस में लडाकर ध्वस्त उन्हे करने में कामयाब नही हो रहा है। ड) संगठन ने दुश्मनों के विभिन्न अंर्तविरोधों का भली भाँति वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया है तथा इन अंर्तविरोधों से विभिन्न स्तरों पर फायदा उठाने तथा दुश्मन को आपस में लडा कर ध्वस्त करने की कार्यनीति पर संगठन कामयाबी हासिल कर रहा है।

63) संगठन से संबंधित दिगर उपसंगठनों की सक्रियता।

अ) संगठन की गैरराजनीतिक इकाईयां ब्राह्मणवादी पार्टियों को मदद पहुंचाने तथा बहुजनों के संगठनों को कमजोर करने का काम करती है। ब) गैरराजनीतिक इकाईयां सिर्फ ब्राह्मणवादी संगठनों को मदद पहुचाती है लेकिन बहुजनों के संगठनों को कमजोर नही करती। क) गैरराजनीतिक इकाईयां बहुजनवादी पार्टि-संगठनों को मदद पहुंचाने का काम करती है लेकिन ब्राह्मणवादी संगठनों को कमजोर नही करती ड) संगठन की गैरराजनीतिक इकाईयां बहुजनवादी पार्टि-संगठनों को मदद पहुंचाने का तथा ब्राह्मण ावादी संगठनों को योजनाबध्द रुप से तोडने-कमजोर करने का काम कर रही है।

.....

(मान. शीतल मरकाम, सरसेनापति गोंडवाना मुक्ति सैनिक दल व्दारा लिखित यह इंटरनेट एडीशन परीक्षण पुस्तिका को मुफ्त में डाउनलोड करे तथा व्यापक रुप से इसे वितरित करें ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों तक यह परीक्षण पुस्तिका पहुंच सकें।)

उत्तर पत्रिका

क्रमांक	विकल्प	प्राप्तांक	क्रमांक	विकल्प	प्राप्तांक	क्रमांक	विकल्प	प्राप्तांक
01	( )	____	22	( )	____	43	( )	____
02	( )	____	23	( )	____	44	( )	____
03	( )	____	24	( )	____	45	( )	____
04	( )	____	25	( )	____	46	( )	____
05	( )	____	26	( )	____	47	( )	____
06	( )	____	27	( )	____	48	( )	____
07	( )	____	28	( )	____	49	( )	____
08	( )	____	29	( )	____	50	( )	____
09	( )	____	30	( )	____	51	( )	____
10	( )	____	31	( )	____	52	( )	____
11	( )	____	32	( )	____	53	( )	____
12	( )	____	33	( )	____	54	( )	____
13	( )	____	34	( )	____	55	( )	____
14	( )	____	35	( )	____	56	( )	____
15	( )	____	36	( )	____	57	( )	____
16	( )	____	37	( )	____	58	( )	____
17	( )	____	38	( )	____	59	( )	____
18	( )	____	39	( )	____	60	( )	____
19	( )	____	40	( )	____	61	( )	____
20	( )	____	41	( )	____	62	( )	____
21	( )	____	42	( )	____	63	( )	____

प्रश्नों का गुणांकन (स्कोरिंग) :- अ = -2.0, ब = -1.0, क = +1.0, ड = +2.0 सभी प्राप्त ऋणात्मक तथा धनात्मक अंकों का जोड कर उसे कुल प्रश्नसंख्या से भाग देने से औसत अंक मिलेगा। प्राप्त औसत अंक के आधार पर तार्किक श्रेणियां नीचे दिये मुताबिक होगी :–

प्राप्त औसत अंक अगर -0.26 से -0.75 है तो वह संगठन ब्राह्मणवादी संगठन है। अगर औसत अंक -0.76 से -1.25 है तो वह संगठन घोर ब्राह्मणवादी संगठन है। अगर औसत अंक -1.26 से -2.0 है तो वह संगठन घोर प्रतिक्रांतिकारी ब्राह्मणवादी झाओनिस्ट संगठन है। अगर औसत अंक -0.25 से + 0.25 है तो वह संगठन अवसरवादी संगठन है।

अगर औसत अंक +0.26 से +0.75 है तो वह संगठन बहुजनवादी संगठन है। औसत अंक अगर +0.76 से +1.25 है तो वह संगठन घोर बहुजनवादी संगठन है। अगर औसत अंक +1.26 से +2.0 है तो वह संगठन बहुजनवादी क्रांतिकारी संगठन है।